कहानियाँ
कल्याणपुरी की

कहानियां कल्याणपुरी की

दिल्ली के कल्याणपुरी क्षेत्र के 'युवा चेंजमेकर्स' द्वारा तैयार की गई ग्रासरूट्स कॉमिक्स का संकलन

ENGENDERING IDEAS, GENERATING DIALOGUE
ISST
1980 - 2020

COMICS POWER!

WORLD COMICS INDIA

प्रस्तावना

हाल के वर्षों में मीडिया अध्ययन, सामाजिक विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान जैसे विषयों में कार्टून की विधा के प्रति विशेष रूप में रूचि जागी है। इसीलिए कार्टून का, सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले आंकड़ों के एक सशक्त स्रोत के रूप में प्रयोग हो रहा है। मेरे लिए यह बेहद रोमांचित करने वाली खबर थी कि कल्याणपुरी इलाके के किशोर किशोरियों और युवाओं को कॉमिक्स कार्यशाला में शामिल होने का मौका मिल रहा है, जिसे वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया के जाने-माने कार्टूनिस्ट शरद शर्मा स्वयं संचालित कर रहे हैं। शरद ने ग्रासरूट्स कॉमिक्स को सामाजिक बदलाव के लिए एक औजार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए एक आंदोलन शुरू किया है।

इन कॉमिक्स कार्यशालाओं को आयोजित करने का उद्देश्य न केवल समुदाय के लोगों द्वारा अपनी कहानियों का निर्माण करना था बल्कि उन किशोर किशोरियों के जीवन में व समुदाय में असरकारी बदलाव लाना भी था।

समाज में एक असरकारी बदलाव या लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना कभी भी आसान नहीं रहा है। लोगों को अपनी मानसिकता या व्यवहार में बदलाव के लिए तैयार करना सदैव चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। अक्सर ऐसे बदलावों की बात करना उनमें कहीं न कहीं संकोच पैदा करता है। ऐसे मुद्दों पर सीधी बातचीत भी लोगों को रास नहीं आती बल्कि इस प्रक्रिया से ही विमुख कर देती है, जबकि कॉमिक्स इसी प्रक्रिया को हल्के फुल्के अंदाज में बयां करती है। कॉमिक्स और कार्टून गंभीर और 'भयावह' दिखलाई देने वाले विषयों को भी आसान बना देते हैं। कॉमिक्स के माध्यम से किसी भी मुद्दे को आसानी से समझाया जा सकता है, यही कारण कि ये मुद्दे कहीं अधिक मानवीय लगने लगते हैं और लोगों को इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं। इसी के चलते कॉमिक्स सामाजिक बदलाव लाने का एक शक्तिशाली औजार बन रहा है।

'युवा साथी केंद्र' में आयोजित कॉमिक्स कार्यशालाएं मुख्य रूप से स्थानीय मुद्दों पर ही केंद्रित थी, यह भी एक बड़ा कारण था कि कल्याणपुरी केंद्र में नियमित रूप से आने वाले स्थानीय लड़के-लड़कियों में यह एक बड़ा आकर्षण पैदा करने में सक्षम हुई। उन कार्यशालाओं में रोजमर्रा की कहानियों पर तैयार कॉमिक्स से, कोई भी बेहद आसानी से अपने स्वयं के अनुभवों के रूप में जुड़ाव महसूस कर सकता है। कल्याणपुरी की इन कार्यशालाओं की श्रृंखला में समुदाय में प्रचलित सामाजिक प्रथाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रतिबिंबित करती कॉमिक्स तैयार की गई।

'कहानियां कल्याणपुरी की' कल्याणपुरी के हमारे युवा चेंजमेकर्स द्वारा इन कार्यशालाओं के दौरान तैयार की गई कॉमिक्स का एक संकलन है। यह पुस्तक वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर आम बहस छेड़ने के लिए एक प्रभावी सामाजिक एजेंडा तय करने का काम कर सकती है। इसके साथ ही मुझे यकीन है कि इस पुस्तक की कॉमिक्स युवाओं को एक नागरिक के तौर पर उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों दोनों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करेगी ।

इन कार्यशालाओं में भाग लेने उन सभी बच्चों के साथ साथ मैं, शरद शर्मा और हमारी युवा साथी टीम मुबाशिरा, स्नेहा, अनिंदया, कविता और वंदना को भी बधाई देना चाहता हूं। कल्याणपुरी के किशोर किशोरियों के साथ एक महत्वपूर्ण कार्य में जुटी पूरी टीम को मेरी शुभकामनाएं।

मुझे आपकी अगली कॉमिक बुक का भी इंतजार रहेगा ।

राजीब नंदी
रिसर्च फेलो एंड ऑफिस इंचार्ज
इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट

फ्रेम दर फ्रेम बदलाव लाते कल्याणपुरी टीन्स

पूर्वी दिल्ली के कल्याणपुरी इलाके के चालीस से भी ज्यादा किशोर किशोरियों के लिए ये रोज़ की तरह एक मामूली ही दिन था जब वो अपने सेंटर आये। ये सेंटर इस मोहल्ले की रोज़ की चहल पहल, शोर और गहमा गहमी से इतर इनको सुकून की छत देता है। सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले इन युवाओं को इस सेंटर में अपने विषय सम्बन्धी चुनोतियों का समाधान निकालने का मौका मिलता है। यहाँ ये जीवन कौशल से जुड़े प्रशिक्षण लेते है साथ ही साथ समाज से जुड़े भेदभाव को भी समझते है और अपनी बात सबके बीच रख पाते है।

तो ये दिन अलग इसलिए बन पड़ा कि उस दिन उनको अभिव्यक्ति के एक अनूठे माध्यम से रूबरू कराया गया। अपनी ज़िंदगी के रोजमर्रा के मुद्दों को वे कैसे कहानियों और चित्रों की मदद से कागज़ पर उकेर सकते हैं, मकसद ये नहीं था कि ये रास्ता उनके लिए कला के क्षेत्र के बड़े आयाम खोलेगा बल्कि उन्हें बेहद साधारण तरीके से अपनी बातों को आम लोगों के बीच रखना सिखाएगा। ग्रासरूट्स कॉमिक्स- प्रत्येक साधारण व्यक्ति को अपनी बातों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है।

स्याही की एक बूँद जब कागज को छूती है तो हजारों लोगों को सोचने पर मजबूर कर देती है। इस माध्यम में सिर्फ एक कागज और पेन की जरूरत है और हाँ जरूरत है आपकी सोच की, सजगता की, कुछ कहने की चाह होने की। ग्रासरूट्स कॉमिक्स माध्यम के द्वारा पूर्व में किये गए प्रयोगों के वीडियो देखकर बच्चों को समझ आया कि कैसे वे भी अपने जीवन के उन तमाम मुद्दों को कॉमिक्स के द्वारा लोगों तक पहुंचा सकते हैं जिन पर समाज में अक्सर कोई गंभीर बहस नहीं दिखाई देती।

स्कूल टाइमिंग को ध्यान में रखकर लड़के और लड़कियों के लिए अलग अलग समय पर सेशन रखे गए। हालाँकि जेंडर के आधार पर प्रतिभागि. यों को विभाजित करना पीड़ादायक निर्णय तो था ही, लेकिन आगे के दिनों में इसकी भरपाई रविवार को ज्वाइंट सेशन बुला कर की गयी। ज्यों ज्यों कार्यक्रम आगे बढ़ा त्यों त्यों बच्चों की रूचि भी बढ़ती चली गयी। कॉमिक्स कार्यशालाओं के दौरान उन्होंने अनेक सम-सामयिक मुद्दों पर अपनी समझ बनायी, लोकल समस्याओं को उठाया, उन पर चर्चा की और ये जाना कि कैसे बदलाव लाया जाये। समस्या को हल करना पहला

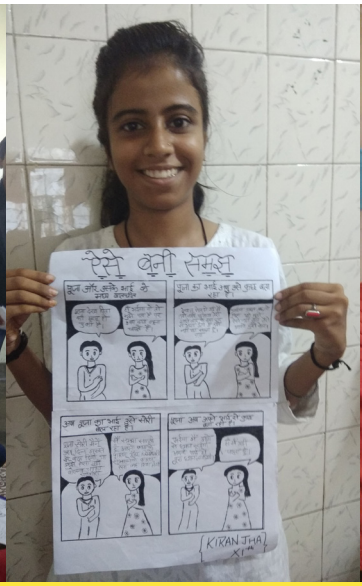

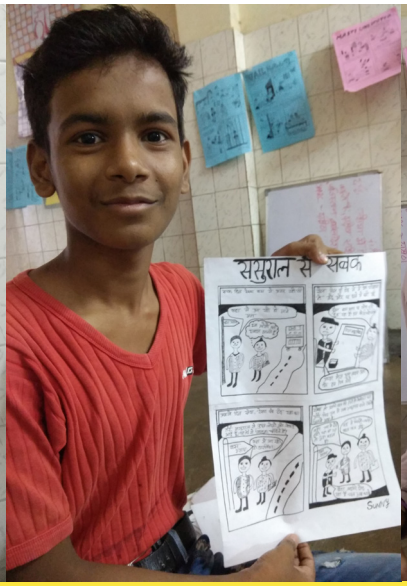

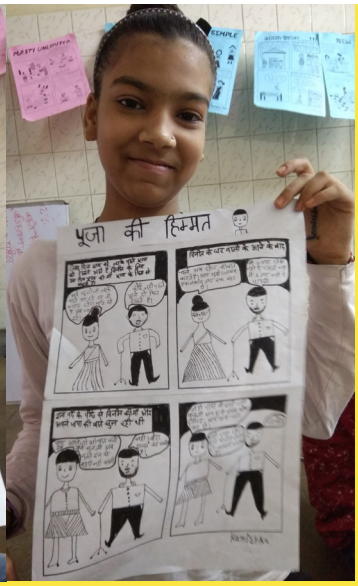

मकसद नहीं था बल्कि उनकी पहचान कर उन पर समाज में बहस छेड़ना इस दिशा में पहला कदम था।
लिंग आधारित भेदभाव, भ्रूण हत्या, छेड़खानी, पुरूषों की घर के काम में भागीदारी, रिश्तों की समझ, किशो. रावस्था में होने वाले शारीरिक व मानसिक बदलाव, स्कूली शिक्षा का स्तर, शिक्षकों के प्रति व्यवहार आदि कुछ मुद्दे थे जिन पर पहली कहानिया लिखी गयीं।

चुनौती ये भी थी की कैसे वे सुपरहीरो की कहानियों के परे इस रियल वर्ल्ड में अपनी भूमिका देखते हैं और साथ ही उनको अपनी कहानियों में भी शामिल करते हैं। चंद रेखाओं की मदद से कैसे अपनी बात को रखा जा सकता है, इसके कुछ प्रयोग किये गए और अच्छी ड्राइंग न बना पाने के डर को उनके दिमाग से निकाला गया।

ग्रासरूट्स कॉमिक्स आम लोगों को साधारण चित्रों की मदद से अपनी बात रखने का जरिया है और साथ ही इसको बनाने के लिए कलाकार होने की जरूरत भी नहीं। ये जानकारी बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए काफी थी.... और फिर देखते ही देखते उनकी पहली कॉमिक्स उनके अपने हाथों में थी। शुरूआती झिझक अब गर्व में बदल चुकी थी, अपनी पहली कॉमिक्स बनाने की खुशी छुपाये न छुपती थी।

कॉमिक्स निर्माण इस प्रक्रिया का अंत नहीं बल्कि शुरूआत थी, इन किशोरों को समझना था कि कैसे ये एक सामाजिक बदलाव का सबब बनेंगी। इसके लिए जरूरत थी कि इन कॉमिक्स को बाहर लोगों के बीच लेकर जाया जाए। कुछ कारणों के चलते इसमें देरी होती चली गयी, बच्चे अपनी पढाई में व्यस्त हो गए और रूचि कम होती चली गयी।

कॉमिक्स पत्रकारिता : ग्रासरूट्स कॉमिक्स की ये प्रक्रिया लोगों को कॉमिक्स पत्रकार बनाने की लिए भी प्रेरित करती है, यह सूचना एवं संवाद का बेहद सशक्त माध्यम है। कुछ दिन बाद जब फिर से मुलाकात हुई तो पाया की ऊर्जा कम जरूर हुई थी लेकिन पूरी तरह खत्म नहीं हुई। एक कॉमिक्स पत्रकार की तरह बच्चों ने एक से बढ़कर एक मुद्दे प्रस्तुत किये, ये मुद्दे थे : पुरानी परम्पराएं, महिला सशक्तिकरण, नशीले पदार्थ, बुलीइंग, जातिगत भेदभाव, बुजुर्गो से भेदभाव आदि।

और फिर इन मुद्दों को कॉमिक्स में ढालने का काम शुरू हुआ। अपनी दूसरी कॉमिक्स बनाकर बच्चे न सिर्फ खुश थे बल्कि इस बात को जानकार और उत्साहित हो गए कि अब उन्हें बतौर ट्रेनर प्रशिक्षित किया जाएगा।

इस बीच उनकी पहली कॉमिक्स की प्रदर्शनी सेंटर की दीवारों की शोभा बढ़ा रही थी। धीरे धीरे मीडिया पर उनकी ओनरशिप बढ़ती जा रही थी।

कॉमिक्स ट्रेनर का प्रशिक्षण

फिर कॉमिक्स ट्रेनर का प्रशिक्षण शुरू हुआ और वो दिन आया जब उनको स्वयं दूसरे बच्चों को कॉमिक्स बनाना सिखाना था।

इस बार भी लड़कियों की सुबह की शिफ्ट और लड़कों की दोपहर की शिफ्ट होने के चलते उन्हें अलग-अलग ग्रुप्स में बांटा गया। कल्याणपुरी पुलिस स्टेशन में बीते चौदह वर्षों से चलाये जा रहे साथी सेंटर के बच्चों के लिए यहाँ कार्यशालायें आयोजित की गयी।

जहाँ किशोरों ने तीस से भी अधिक बच्चों को तीन दिनों तक कॉमिक्स बनाने और कहानी कहने के गुर सिखाये वहीँ लड़कियों ने युवा सेंटर की लड़कियों को प्रशिक्षित किया। यहाँ प्रदुषण से लेकर पार्क की सफाई, शिक्षा स्वास्थय, बराबरी जैसे अनेक स्थानीय मुद्दों पर कॉमिक्स बनी।

कॉमिक्स ट्रेनर की भूमिका में आने के बाद बच्चों का उत्साह और आत्मविश्वास सातवें आसमान पर था। अपनी बनाई कॉमिक्स को अब अपने मोहल्ले की लोगों के बीच ले जाने के इच्छुक थे। छोटे छोटे ग्रुप्स में वे अपनी कॉमिक्स लेकर बस्ती की गलियों में घूमे और स्थानीय लोगों को न सिर्फ अपनी कॉमिक्स दिखाई सुनाई, बल्कि उन मुद्दों पर उनके साथ चर्चाए भी की। स्थानीय लोग खासकर उनके अपने घर के लोग बच्चों की इस गंभीर पहल को देखकर हैरान थे और साथ ही खुश भी।

स्कूलों में प्रदर्शनी: मुद्दों पर आधारित बच्चों की इन कॉमिक्स को स्थानीय विद्यालयों में भी प्रदर्शित किया गया। बच्चों ने स्वयं इसका नेतृत्व किया और बड़ी संख्या में अपने स्कूल के और दुसरे विद्यालयों के बच्चों को सामाजिक बदलाव की बहस से जोड़ा। ये सिलसिला अभी भी बदस्तूर जारी है।

कॉमिक्स नोटिस बोर्ड्स : बच्चों की बनायीं इन कॉमिक्स को आम लोगों की बीच ले जाने की मुहिम के तहत दो कॉमिक्स नोटिस बोर्ड्स स्थापित किये गए हैं। जहाँ बारी-बारी से एक एक कॉमिक्स को लोगों के बीच प्रदर्शित किया जा रहा है। समुदाय के बीच संवाद स्थापित करने का ये अनूठा तरीका लोगों को खूब भा रहा है।

इस पूरे प्रयास ने न सिर्फ बच्चों को अभिव्यक्ति का एक नया माध्यम दिया बल्कि उन्हें टेक्स्ट-बुक के परे मौजूद दुनिया की किताब को पढ़ने का मौका दिया। कार्यशालों के दौरान उन्होंने डॉक्टर और इंजीनियर के अलावा नए व्यवसायों और उनकी भविष्य में संभावनाओं के बारे में भी जाना, बहुत से सवाल पूछे । कुछ ने ग्राफिक सीखने की इच्छा जाहिर की तो कोई सूचना तकनिकी में अपना भविष्य बनाना चाहता है, लेकिन इस सब से बढ़कर उन्हें एहसास हुआ कि एक सजग एवं जिम्मेदार नागरिक होने की भी कितनी जरूरत है।

शरद शर्मा, प्रशिक्षक एवं संस्थापक
वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया
www.worldcomicsindia.com

GROWING UP

बढ़ते बच्चे

क्यों नहीं बता सकते....?

Nisha (Rusha) ANNDDAJ

आकर्षण ही तो है

Urvashi

रंग नहीं गुण

रानी और उसकी माँ मीना एक गाँव में रहते हैं।
रानी के साँवले रंग के कारण उसका कोई लड़के वाले पसंद नहीं करेंगे। अगर शादी के लिए मान भी गए तो दहेज की बड़ी माँग करेंगे......
रानी की माँ टी.वी पर एक गोरा होने वाली क्रीम का एड देखती हैं।
रानी यही क्रीम मैंने तुम्हारे लिए मँगाई हूँ
माँ मैं पढ़ी-लिखी हूँ, मैं इन सब पर विश्वास नहीं करती और न लगाऊँगी।
अगले दिन रानी अपनी माँ को अपनी टीचर के पास ले जाती हैं।
देखो ये मीरा के चेहरे पर जो दाने निकले हैं। वह उन्हीं क्रीम का असर हैं।....
मीना और टीचर अकेले में।
मीना जी रानी की रंगत उसकी शिक्षा, कुशलता व गुण हैं। अगर रानी प्रशिक्षित होकर कोई नौकरी करती हैं, तो बिना दहेज के और सुखमय व सम्मान सहित जीवन व्यतीत करेगी।
हाँ, मैडम आप सही कह रही हो।

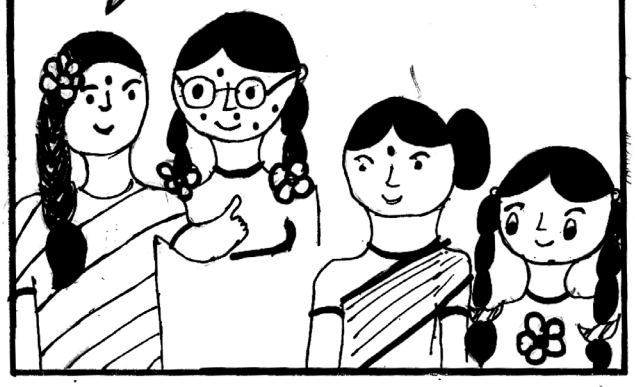

कद की कहानी

Aman. R.

पढ़ाई जरूरी है।

Shivam

GENDER EQUALITY

लैंगिक समानता

डॉक्टर पहुँचा जेल

Vishnu

लिंग जाँच नहीं

Anchal Negi

लिंग जाँच एक अपराध

डॉ० शर्मा के पास पहुचा एक जोड़ा
डाक्टर जी हमे अपने होने वाले बच्चे की लिंग की जाँच करवानी है।
USE ME
डॉक्टर शर्मा जी जोड़े से कहते हुए!
पहले मुझे ये बताओ तुम्हे ये जाँच क्यों करवानी है!
USE
जोड़ा डॉ० शर्मा से कहते हुए!
डॉ० साहब को पालने में बहुत खर्चा होता है! पहले उन्हें पढ़ाना फिर शादी कराना फिर दहेज देना और वह सुरक्षित भी नही है!
USE
डॉ० शर्मा जी का जवाब!
अरे मूर्ख व्यक्ति क्या आपको पता नहीं है! बच्चो के लिंग की जाँच करवाना अपराध है!
Aakash

लड़का और लड़की में भेद भाव

Dimpy

बराबरी की पोशाक

Shetal YADAV

EMPOWERMENT

सशक्तिकरण

जब मौका मिला.....

रानी की नई नौकरी लगी है। एक दिन....
सुनो रानी कल से Over Time लगेगा। 10:00pm तक OK। नहीं करना तो हिसाब करवा लेना
OK Sir! मैं आपको कल सुबह बता दुंगी
अरे! अब मैं क्या करूं कितनी मुश्किल से तो मेरे Parents इस Job के लिए माने थे। और अब ये Overtime...
जब रानी घर आकर पापा से पुछती है।...
पापा कल से मैं Late आऊंगी। 10:00 या 10:30pm बज सकते हैं।
नहीं! कोई ज़रूरत नहीं है!
पापा आप कहते थे "बेटी तुम खुब पढ़ो" और आज जब मौका मिला है...
ओह। ठीक है बेटी मैं समझ गया पर अपना ख्याल रखना। ठीक से घर आना।
-Jyoti

मैं बनी आत्मनिर्भर

Tanisha IX G

नकली दोस्ती

Preeti

पूजा की हिम्मत

Kanishka

लड़कियों की सुरक्षा

BHARAT
VIII th R

सुरक्षित रहें

HIMANSHI
(IX)

पार्क की समस्या

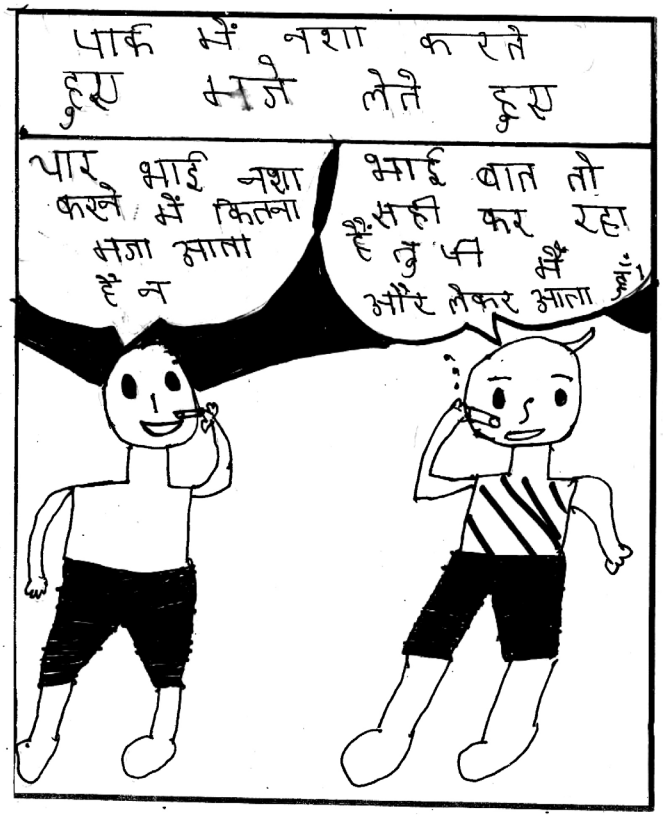

ANKit

BEHAVIOUR

व्यवहार

मोबाईल से लगाव 3

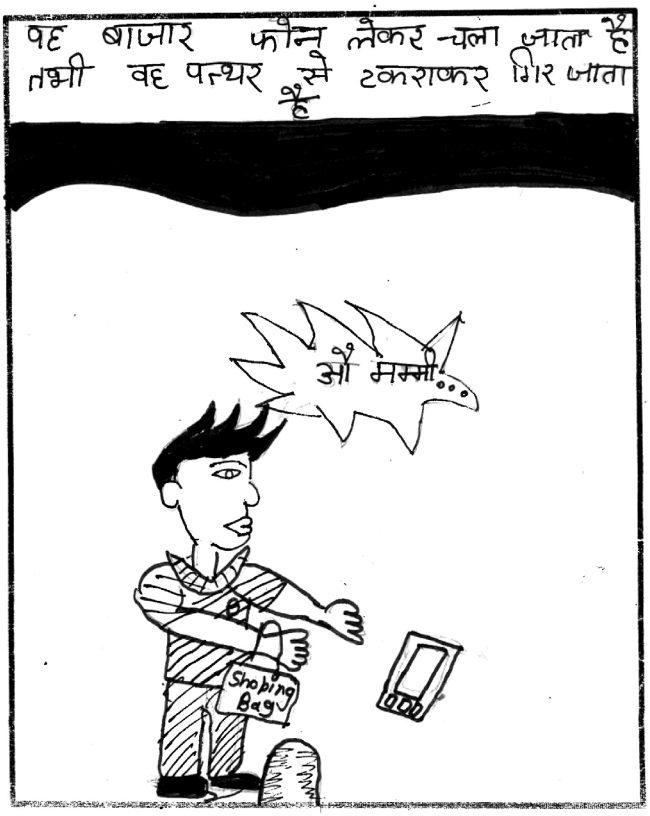

Sujeet
VII th A

लापरवाही

एक छोटा सा गाँव था उस गाँव मे एक लड़का और उसकी माँ रहती थी।
बेटा घर मे ताला लगा देना
हाँ हाँ माँ मै लगा दूँगा कौन लगा रहा है ताला।
एक बार मोहन की माँ खाना बनाकर लेटने चली गई।
बेटा गैस बद कर दो
अभी नही माँ बाद मे कर दूगा अभी मे फोन चला रहा हूँ
मोहन खेल मे गैस बंद करना भूल जाता है।
कुछ समय बाद
गैस की महक कहा से आ रही है जाकर बंद कर देती हूँ।
गैस बंद करने के बाद।
बेटा देखो पूरे घर मे फैल गई है सिलेन्डर भी फट सकता है।
गलती हो गई माँ मेरी लापरवाही के कारण घर मे सिलेन्डर भी फट सकता था।
AKASH

पटाखे पर जुरमाना

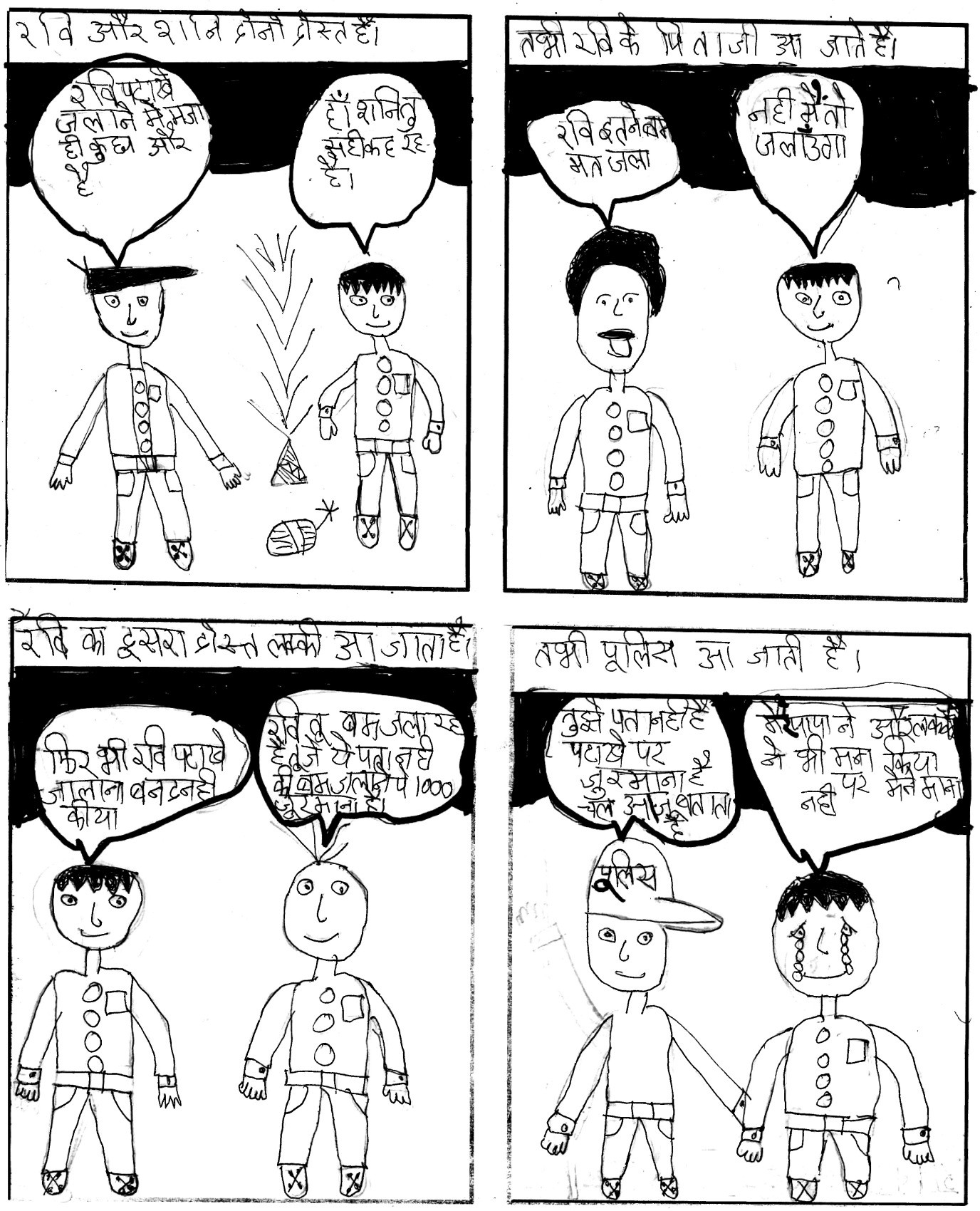

VISHAL

PUBG का नशा

KASAK
IX

पार्क की समस्या

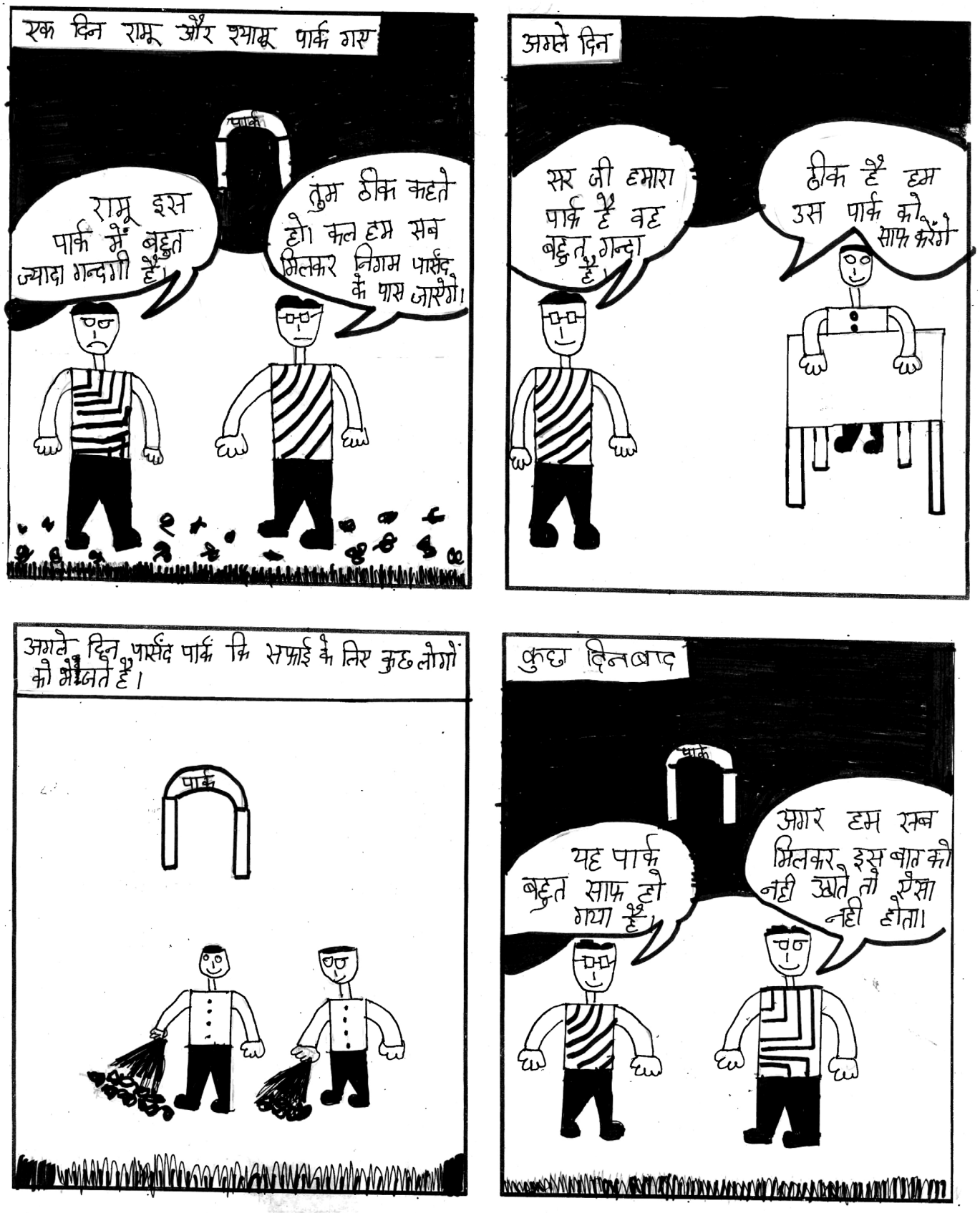

Krishna VII-A

ENVIRONMENT

वातावरण

प्रदूषण की समस्या

Mehul Raj

प्रदूषण से बचे

NANDINI
IX

कचरा एक समस्या

Krishna, Thakur

VII B

प्रदूषण एक समस्या -

Rohit
VII

प्रदूषण

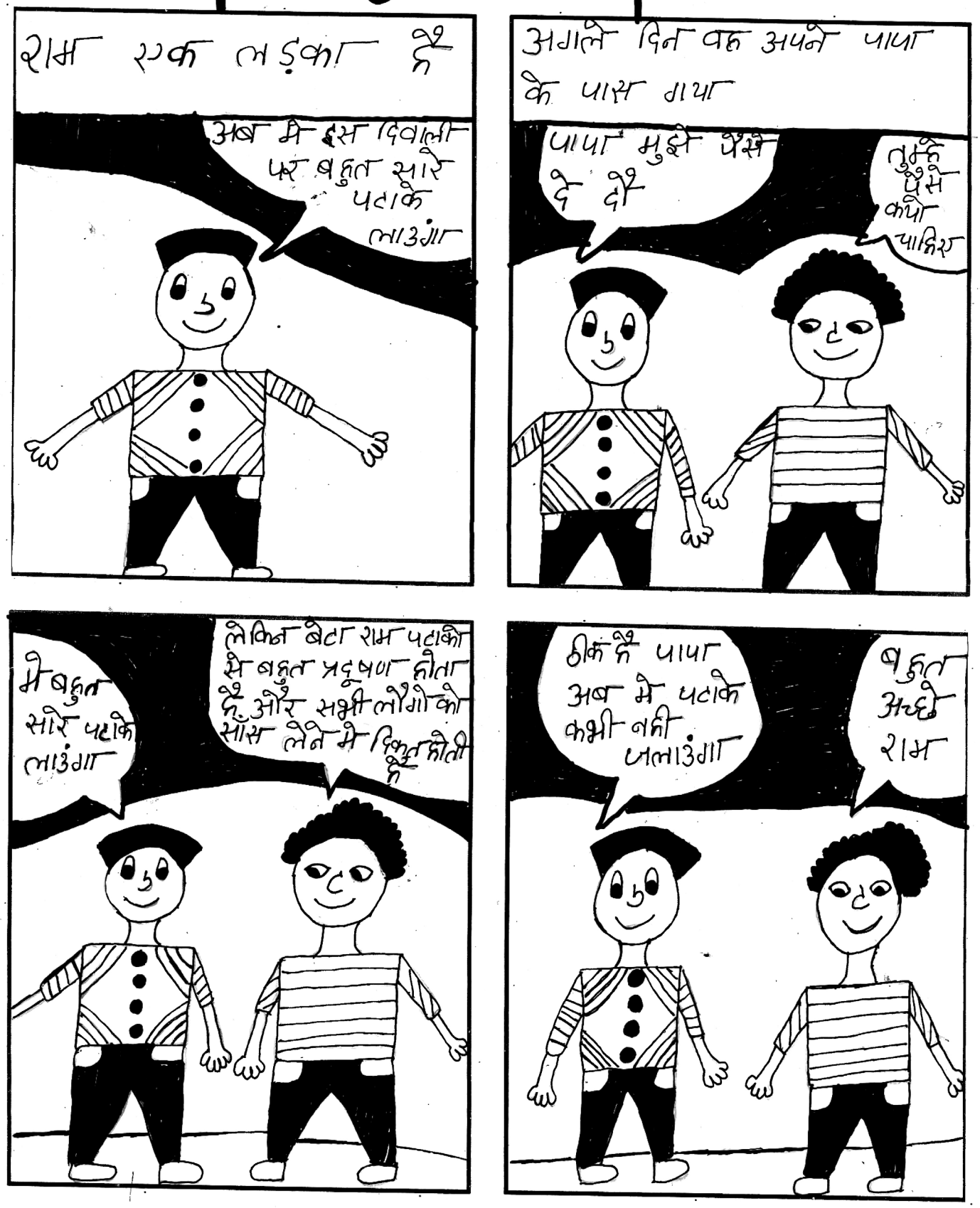
राम एक लड़का है
अब मै इस दिवाली पर बहुत सारे पटाके लाउंगा
अगले दिन वह अपने पापा के पास गया
पापा मुझे पैसे दे दो
तुम्हे पैसे क्यो चाहिए
लेकिन बेटा राम पटाको से बहुत प्रदूषण होता है और सभी लोगो को साँस लेने मे दिक्कत होती है
मै बहुत सारे पटाके लाउंगा
ठीक है पापा अब मै पटाके कभी नही जलाउंगा
बहुत अच्छे राम

Aman

पॉलीथीन एक समस्या।

Cheshant

खुले में शौच

Name => Sanju

HARASSMENT

उत्पीड़न

* रोहित को सबक *

Akash_GUNNU

असली मर्द कौन ???......

Neetu Jaiswal

ना मतलब ना

Annu
XI[th]

चुप न रहना

अरे जाने मन किधर जा रही हो, रुको तो कहाँ जा रही हो, अपना नाम तो बताओ, रुको तो सही...
अरे यह लड़के मुझे रोज छेड़ते हैं मुझे घर वालो को बता देना चाहिए
अरे देखो वही लड़की
BUS STOP
कुछ लड़के मुझे रोज Bus Stop पर छेड़ते हैं मैं क्या करु मम्मी-पापा
अच्छा हुआ कि यह बात तुम ने हमे बता दी हम आज ही पुलिस मे शिकायत करेंगे
अगले दिन लड़की के माता-पिता पुलिस स्टेशन में
अच्छा आप ने उन्हे कहाँ देखा, और कब देखा हमे आप बता दो
हम अपनी बेटी के साथ हो रही छेड़ छाड़ के लिए रिपोर्ट लिखवाने आए हैं
अब आप चिंता ना करे हम ने इन लड़को को पकड़ लिया अब यह आपको परेशान नही करेंगे
आपका धन्यवाद

AMAN

२मेश पहुचाँ जेल

Nikhil

ससुराल से सबक

SUNNY

विवेक पहुँचा जेल

VIVEK
6-D

सबक

मुस्कान अपने घर से निकल कर स्कूल की ओर जा रही थी तभी अचानक उसने एक लड़के को देखा।
oh ये लड़का मुझे कैसे देख रहा है मुझे अच्छा नहीं लग रहा
कितनी सुन्दर लड़की जा रही है मुझे तो इससे Setting करनी है
मुस्कान उसी रास्ते से अपने स्कूल जा रही थी उस लड़के ने मुस्कान को देखा और उसका हाथ पकड़ लिया
तुम मेरा हाथ क्यों पकड़े हो तुम हो कौन जो मेरा हाथ पकड़ा
मैंने तुम्हें जब से देखा है मुझे तुम से प्यार हो गया है
जब रोहन ने मुस्कान का हाथ पकड़ा तो मुस्कान ने उसे चाटा मार दिया।
तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरा हाथ पकड़ने की
इस लड़की की हिम्मत कैसे मुझे चाटा मारा उससे मैं चाटे का बदला लुंगा
मुस्कान को बहुत गुस्सा आता है तो रोहन को थाने में Complane कराने की धमकी देती
अब मैं तुम्हारी Complane थाने में कराऊंगी और तुम्हें सजा दिलाऊंगी
Sorry मुझसे गलती हो गई मैं आज के बाद किसी लड़की को नहीं छेड़ूंगा Sorry ...

TANNU

लड़की की छेड़खानी

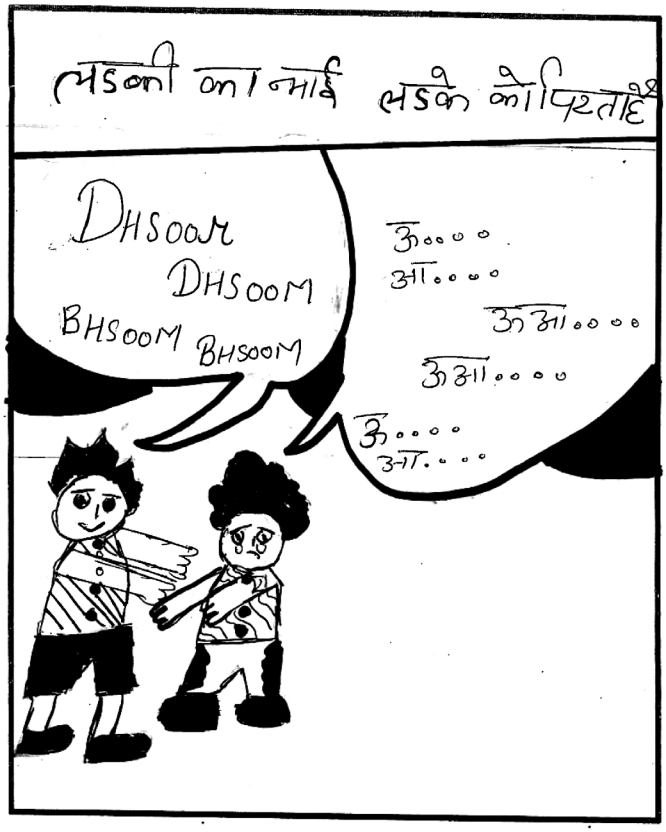

Gaur
VIII-B

OLD CUSTOMS

पुरानी परंपराएं

लालच का फल

Naveen

दहेज

जितेन्द्र VIII "C"

बुरा है दहेज लोभ

Cheetal YADAV

RELATIONSHIP

रिश्ते-संबंध

सब हैं बराबर

शिवम और संदीप....
संदीप खेलने में मजा आ रहा है ना
हाँ शिवम बहुत मजा आ रहा है।
तभी संदीप की मम्मी वहाँ आती है।
संदीप बॉल को इधर फेंको
हाँ ये लो शिवम
ये तुम किसके साथ खेल रहे हो यह तो निचली जात का है।
मम्मी यार हम स्कूल में सर ने बताया है कि जाति के आधार पर भेदभाव करना कानूनी अपराध है।
ये तो मुझे पता ही नहीं था।
बात तो ठीक ही है भला इंसान तो इंसान ही है छोटा बड़ा क्या
तो मम्मी अब हम खेल न चले
AMAN·A

ऐसे बनी समझ

{ KIRAN JHA
XI th }

ऐसे रुकेगी छेड़खानी ?

कुछ लड़के एक लड़की को हमेशा परेशान करते थे...
ये रोज-रोज की छेड़छाड़ से तंग आ चुकी हूँ। अब कुछ करना होगा।
अगले दिन लड़की का भाई वहाँ पहुंचता है...
खबरदार जो तुमने मेरी बहन को छेड़ा तो...
माफ कर दो अब नहीं करूंगा
जब उसका भाई दूसरी लड़की को छेड़ता है...
क्यों भाई अपनी बहन को कोई छेड़े तो तुम बहुत नाराज होते हो
जब इस बात की खबर इस लड़की को चलती है तो...
भाई ये छेड़छाड़ तभी रुकेगी जब आप दूसरी लड़की की भी इज्जत करोगे
PREM

ROLE REVERSAL

भूमिका में बदलाव

अब भेदभाव नहीं

- Jyoti
XI th

बदलो परम्परा

कौशल

पड़ोसी को सबक

Pawan

SUBSTANCE ABUSE

नशीले पदार्थों का सेवन

धूम्रपान का नशा

CHAVCHAL
(IX)

दारू पिना

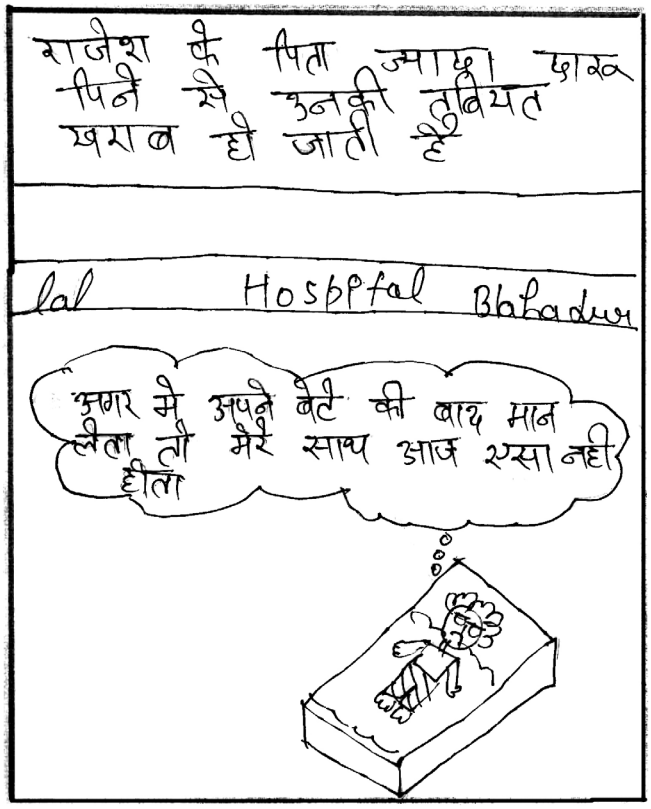

Name - Gaurav
Class - VIIth A

कलयुगी का बेटा

Anchal Negi

EDUCATION

शिक्षा

शिक्षा
बाहन भाई से बात करती हुई।
भाई मुझे भी तेरी तरह स्कूल जाना है।
नही! लड़किया सिर्फ़ घर का काम करती है
मम्मी और बेटी बता कर रही है।
मम्मी मुझे भी भाई कि तरह स्कूल जाना है।
नही। तेरे और भाई मे बहुत अतंर है!
बेटी माँ को समझाते हुए
लड़कियाँ घर का काम करने को लिए होती है।
मम्मी आप गलत सोच रहे है लड़का लड़की एक समान है सबको पढ़न का अधिकार है।
माँ समझ गई।
ठिक बेटी मे समझ गई कि सभी एक समान है!
ठिक मम्मी मे भी भाई कि तरह नाम रोशन करुगी
Jyoti IX

लापरवाही

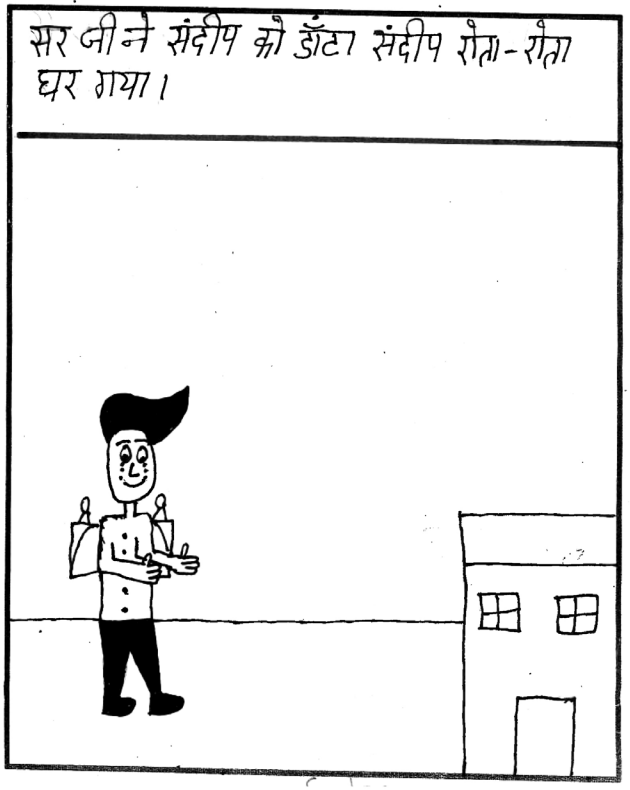

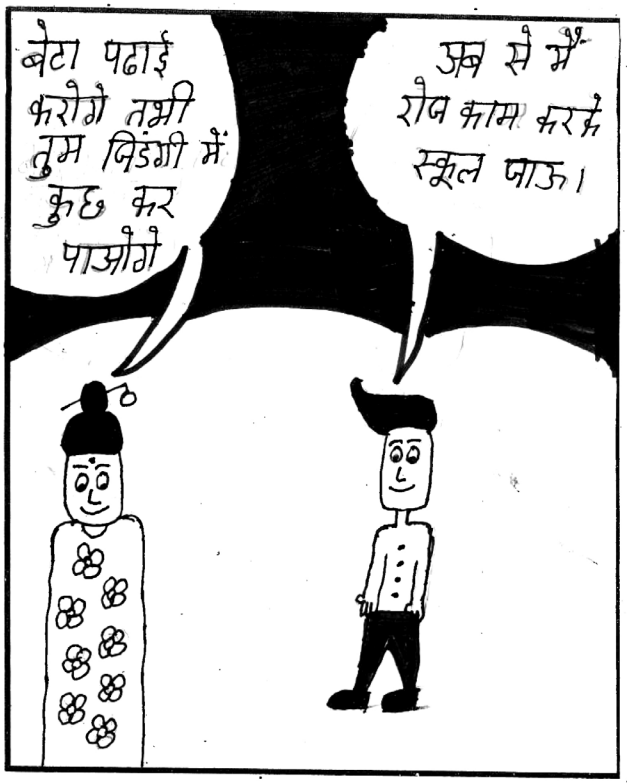

Sandeep VII-C

लड़का और लड़की में भेदभाव

Jasmeet Singh
VII th A

ISST 40 1980 - 2020 ENGENDERING IDEAS, GENERATING DIALOGUE

COMICS POWER!

WORLD COMICS INDIA